हर्षवर्धन और उनके काल का इतिहास जानने के लिए विभिन्न प्रकार के स्रोत उपलब्ध हैं। इनमें से कुछ स्रोत समकालीन साहित्यिक कृतियां हैं, जबकि कुछ पुरातात्विक प्रमाण हैं। यहां हम प्रमुख साहित्यिक और पुरातात्विक स्रोतों का वर्णन करेंगे, जिनसे हर्षवर्धन के जीवन और उनके शासनकाल के बारे में जानकारी प्राप्त की जा सकती है:

1. बाणभट्ट की 'हर्षचरित'

हर्षचरित हर्षवर्धन के दरबारी कवि बाणभट्ट द्वारा रचित एक महत्त्वपूर्ण जीवनी है। यह कृति संस्कृत में लिखी गई थी और हर्षवर्धन के जीवन का प्रथम आधिकारिक साहित्यिक स्रोत मानी जाती है। इसमें उनके प्रारंभिक जीवन, परिवार, शासनकाल, युद्ध, और उपलब्धियों का वर्णन मिलता है।

यह रचना केवल हर्ष के व्यक्तिगत और राजनीतिक जीवन का ही नहीं, बल्कि उस समय की समाजिक और सांस्कृतिक स्थिति का भी एक महत्वपूर्ण विवरण देती है। यद्यपि यह एक दरबारी काव्य है, जिसमें बाणभट्ट ने हर्षवर्धन की प्रशंसा की है, फिर भी यह उस समय की घटनाओं और परिस्थितियों को समझने के लिए बेहद महत्वपूर्ण है।

2. हर्षवर्धन की नाट्यकृतियां

रत्नावली, नागानंद, और प्रियदर्शिका तीन प्रमुख नाटक हैं जो हर्षवर्धन द्वारा लिखे गए माने जाते हैं। ये नाटक न केवल उनकी साहित्यिक रुचि और सांस्कृतिक उपलब्धियों को दिखाते हैं, बल्कि उस समय के समाज की जीवनशैली, धार्मिक आस्थाओं और राज्य की सामाजिक संरचना को भी दर्शाते हैं।

इन नाटकों के माध्यम से हर्ष के समय की राजनीति, समाज, और धर्म की विस्तृत झलक मिलती है। विशेषकर, नागानंद में बौद्ध धर्म और ब्राह्मणवाद के सह-अस्तित्व की झलक मिलती है, जो हर्षवर्धन के समय की धार्मिक नीति का प्रतीक है।

3. ह्वेनसांग (चीनी यात्री) के यात्रा वृतांत

हर्षवर्धन के शासनकाल के बारे में जानकारी का एक अन्य महत्वपूर्ण स्रोत चीनी यात्री ह्वेनसांग (Hsuan Tsang या Xuanzang) का यात्रा विवरण है। ह्वेनसांग सातवीं शताब्दी में भारत आया और हर्षवर्धन के दरबार में कई वर्ष रहा। उसने अपनी यात्रा के दौरान भारत की सामाजिक, धार्मिक, और राजनीतिक स्थिति का विस्तृत वर्णन किया।

ह्वेनसांग ने हर्षवर्धन की न्यायप्रियता, उनके धार्मिक दृष्टिकोण, और समाज के विभिन्न वर्गों के साथ उनके संबंधों का वर्णन किया है। उसकी रचना "सी-यू-की" (Record of the Western Regions) भारतीय इतिहास के लिए एक अमूल्य दस्तावेज है। ह्वेनसांग ने कन्नौज की सभा, बौद्ध धर्म के प्रति हर्षवर्धन के समर्थन और उसकी व्यापक धार्मिक नीति का विस्तृत वर्णन किया है।

4. राजतरंगिणी

राजतरंगिणी कश्मीर के इतिहासकार कल्हण द्वारा रचित एक महत्वपूर्ण ग्रंथ है, जिसमें हर्षवर्धन के समय का कुछ विवरण मिलता है। यद्यपि यह ग्रंथ हर्षवर्धन के काल से काफी बाद का है, फिर भी इसमें उत्तर भारत के प्रमुख राजाओं और उनके शासनकाल का संक्षिप्त वर्णन मिलता है।

कल्हण ने हर्षवर्धन के व्यक्तित्व और शासनकाल का वर्णन किया है, जिसमें वह उनके समय की राजनीतिक संरचना और समाजिक स्थिति पर प्रकाश डालता है। यह ग्रंथ उत्तर भारत के तत्कालीन राजनीतिक माहौल को समझने के लिए महत्वपूर्ण स्रोत है।

5. पुरातात्विक और अभिलेखीय स्रोत

हर्षवर्धन के शासनकाल के अभिलेख भी उनके काल के बारे में जानकारी प्राप्त करने के महत्वपूर्ण स्रोत हैं। हर्षवर्धन के नाम पर मिले ताम्रपत्र, शिलालेख, और अन्य अभिलेखीय साक्ष्य उनके प्रशासन, भूमि दान, और धार्मिक कार्यों के बारे में जानकारी प्रदान करते हैं।

उदाहरण के लिए, बंसखेरा ताम्रपत्र हर्षवर्धन द्वारा किए गए भूमि दान का एक महत्वपूर्ण प्रमाण है। इस ताम्रपत्र में हर्षवर्धन के द्वारा ब्राह्मणों को दिए गए दान का विवरण मिलता है, जिससे उनकी दानशीलता और धार्मिक नीतियों का पता चलता है।

इसके अलावा, कन्नौज और थानेश्वर में पाए गए पुरातात्विक अवशेष हर्षवर्धन के शासनकाल की भव्यता और सांस्कृतिक उपलब्धियों की पुष्टि करते हैं।

6. तिब्बती और बौद्ध स्रोत

हर्षवर्धन के बारे में जानकारी के लिए कुछ तिब्बती और बौद्ध स्रोत भी महत्वपूर्ण माने जाते हैं। हर्षवर्धन के शासनकाल में बौद्ध धर्म का प्रभाव अत्यधिक था और बौद्ध साहित्य में उनके धार्मिक संरक्षण का वर्णन मिलता है।

हर्षवर्धन की बौद्ध धर्म के प्रति आस्था को तिब्बती स्रोतों में बौद्ध धर्म के संरक्षक के रूप में चित्रित किया गया है। बौद्ध ग्रंथों और अनुयायियों ने हर्ष के शासनकाल को बौद्ध धर्म के प्रसार के लिए अनुकूल बताया है।

7. अलबरूनी का वर्णन

11वीं शताब्दी के इतिहासकार अलबरूनी ने भी अपनी पुस्तक "किताब-उल-हिंद" में हर्षवर्धन और उनके काल का संक्षिप्त उल्लेख किया है। यद्यपि अलबरूनी का काल हर्षवर्धन के समय से कुछ सदियों बाद का है, लेकिन उसने अपने अध्ययन में पूर्ववर्ती भारतीय शासकों का भी उल्लेख किया है, जिनमें हर्षवर्धन शामिल हैं।

निष्कर्ष

हर्षवर्धन और उनके काल का इतिहास जानने के लिए उपरोक्त स्रोत अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। बाणभट्ट का हर्षचरित, ह्वेनसांग का यात्रा वृतांत, और हर्षवर्धन द्वारा रचित नाट्यकृतियां उनके शासनकाल और व्यक्तिगत जीवन को

समझने में सहायता करती हैं। इसके अलावा, पुरातात्विक साक्ष्य, अभिलेख, और अन्य समकालीन साहित्यिक कृतियां हर्षवर्धन की राजनीतिक, सामाजिक, और धार्मिक नीतियों का व्यापक चित्र प्रस्तुत करती हैं।